

# भारत में प्रागैतिहासिक युग – Prehistoric Age in India

[S samanyagyan.com/hindi/gk-prehistoric-india-important-points](https://samanyagyan.com/hindi/gk-prehistoric-india-important-points)

प्रागैतिहासिक युग उस समय को संदर्भित करता है जब कोई लेखन और विकास नहीं था। इसके पाँच काल होते हैं – पैलियोलिथिक, मेसोलिथिक, नियोलिथिक, चालकोलिथिक और लौह युग। यह IAS परीक्षा के लिए प्राचीन भारतीय इतिहास के अंतर्गत महत्वपूर्ण विषयों में से एक है। यह लेख भारत में प्रागैतिहासिक युग की सभी प्रासंगिक जानकारी देता है।

प्रागैतिहासिक भारत – Prehistoric India

## इतिहास

इतिहास (ग्रीक शब्द से – हिस्टोरिया, जिसका अर्थ है “जांच”, जांच द्वारा प्राप्त ज्ञान) अतीत का अध्ययन है। इतिहास एक छत्र शब्द है जो पिछली घटनाओं के साथ-साथ इन घटनाओं के बारे में जानकारी की खोज, संग्रह, संगठन, प्रस्तुति और व्याख्या से संबंधित है। इसे पूर्व-इतिहास, प्रोटो-इतिहास और इतिहास में विभाजित किया गया है।

1. **पूर्व-इतिहास** – लेखन के आविष्कार से पहले हुई घटनाओं को पूर्व-इतिहास माना जाता है। पूर्व इतिहास तीन पत्थर युगों द्वारा दर्शाया गया है।
2. **प्रोटो-इतिहास (Proto-history)** – यह पूर्व-इतिहास और इतिहास के बीच की अवधि को संदर्भित करता है, जिसके दौरान एक संस्कृति या संगठन अभी तक विकसित नहीं हुआ है, लेकिन एक समकालीन साक्षर सभ्यता के लिखित रिकॉर्ड में इसका उल्लेख है। उदाहरण के लिए, हड़प्पा सभ्यता की लिपि अनिर्धारित है, हालांकि चूंकि इसका अस्तित्व मेसोपोटामिया के लेखन में है, इसलिए इसे प्रोटो-हिस्ट्री का हिस्सा माना जाता है। इसी तरह, 1500-600 ईसा पूर्व से वैदिक सभ्यता को प्रोटो-हिस्ट्री का भी हिस्सा माना जाता है। पुरातत्वविदों द्वारा नवपाषाण और चालकोलिथिक (Neolithic and Chalcolithic) संस्कृतियों को प्रोटो-इतिहास का हिस्सा भी माना जाता है।
3. **इतिहास** – लेखन के आविष्कार के बाद अतीत का अध्ययन और लिखित अभिलेखों और पुरातात्विक स्रोतों के आधार पर साक्षर समाजों का अध्ययन इतिहास का गठन करता है।

## प्राचीन भारतीय इतिहास का निर्माण – Construction of Ancient Indian History

इतिहास के पुनर्निर्माण में मदद करने वाले स्रोत हैं:

1. **गैर-साहित्यिक स्रोत**
2. **साहित्यिक स्रोत** – जिसमें धार्मिक साहित्य और धर्मनिरपेक्ष साहित्य शामिल हैं

## गैर-साहित्यिक स्रोत – Non-Literary Sources

1. **सिक्के:** प्राचीन भारतीय मुद्रा को कागज के रूप में नहीं बल्कि सिक्कों के रूप में जारी किया गया था। भारत में पाए जाने वाले शुरुआती सिक्कों में केवल कुछ प्रतीक थे, चांदी और तांबे से बने पंच-चिह्नित सिक्के, लेकिन बाद के सिक्कों में राजाओं, देवताओं, तिथियों आदि के नामों का उल्लेख था। वे क्षेत्र जहां वे पाए गए थे, उनके प्रसार का क्षेत्र इंगित करता है। इसने कई सत्तारूढ़ राजवंशों के इतिहास को फिर से बनाने में सक्षम किया, विशेष रूप से इंडो-यूनानियों ने, जो उत्तरी अफगानिस्तान से भारत आए और भारत पर 2 और 1 ईसा पूर्व में शासन किया। सिक्के अलग-अलग राजवंशों के आर्थिक इतिहास पर प्रकाश डालते हैं और उस समय की लिपि, कला, धर्म जैसे विभिन्न मापदंडों पर इनपुट भी प्रदान करते हैं। यह धातु विज्ञान और विज्ञान और प्रौद्योगिकी के संदर्भ में हुई प्रगति को समझने में भी मदद करता है। (सिक्कों के अध्ययन को न्यूमिज़माटिक्स कहा जाता है)।
2. **पुरातत्व / सामग्री बनी हुई है:** वह विज्ञान जो पुराने टीले की खुदाई को एक व्यवस्थित तरीके से करता है, क्रमिक परतों में और लोगों के भौतिक जीवन का एक विचार बनाने में सक्षम होता है, जिसे पुरातत्व कहा जाता है। खुदाई और अन्वेषण के परिणामस्वरूप सामग्री बरामद की गई है जो विभिन्न प्रकार की परीक्षाओं के अधीन हैं। उनकी तारीखें रेडियोकार्बन डेटिंग के अनुसार तय की जाती हैं। उदाहरण के लिए, हड़प्पा काल से संबंधित उत्खनन स्थल हमें उस युग में रहने वाले लोगों के जीवन के बारे में जानने में मदद करते हैं। इसी तरह, मेगालिथ (दक्षिण भारत में कब्र) 300 ईसा पूर्व से पहले दक्कन और दक्षिण भारत में रहने वाले लोगों के जीवन पर प्रकाश डालते हैं।
3. **शिलालेख / प्रशस्ति** – प्राचीन शिलालेखों के अध्ययन और व्याख्या को एपिग्राफी कहा जाता है। ताम्र जैसे पत्थर और धातु जैसे कठोर सतहों पर उत्कीर्ण लेख जो आमतौर पर कुछ उपलब्धियों, विचारों, शाही आदेशों और निर्णयों को दर्ज करते हैं जो विभिन्न धर्मों और उस युग की प्रशासनिक नीतियों को समझने में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, अशोक द्वारा जारी की गई राज्य नीति का विवरण और शिलालेख, सातवाहन, दक्कन के राजाओं द्वारा भूमि अनुदान की रिकॉर्डिंग।
4. **विदेशी खाते:** स्वदेशी साहित्य को विदेशी खातों द्वारा पूरक किया जा सकता है। भारत में ग्रीक, चीनी और रोमन आगंतुक आए, या तो यात्रियों या धार्मिक धर्मान्तरित, और हमारे ऐतिहासिक अतीत के एक समृद्ध खाते को पीछे छोड़ दिया।

### उनमें से कुछ सूचनाएं थीं:

- ग्रीक राजदूत मेगस्थनीज ने “इंडिका” लिखा और मौर्य समाज और प्रशासन के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान की।
- यूनानी भाषा में लिखा गया “पैरीपस ऑफ द एरीथ्रियन सी” और “टॉलेमी का भूगोल” दोनों भारत और रोमन साम्राज्य के बीच व्यापार के बंदरगाहों और वस्तुओं के बारे में बहुमूल्य जानकारी देते हैं।
- बौद्ध यात्रियों के फा-हिएन ने गुप्त काल के एक ज्वलंत खाते को छोड़ दिया।
- बौद्ध तीर्थयात्री हुस्न-त्सांग ने भारत का दौरा किया और राजा हर्षवर्धन के शासन और नालंदा विश्वविद्यालय के गौरव के तहत भारत का विवरण दिया।

## साहित्य के स्रोत – Literary Sources

**धार्मिक साहित्य:** धार्मिक साहित्य प्राचीन भारतीय काल की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक स्थितियों पर प्रकाश डालता है। कुछ स्रोत हैं:

- **चार वेद** – वेदों को c.1500 – 500 BCE को सौंपा जा सकता है। ऋग्वेद में मुख्य रूप से प्रार्थनाएँ शामिल हैं, जबकि बाद के वैदिक ग्रंथों (सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद) में न केवल प्रार्थनाएँ, बल्कि अनुष्ठान, जादू और पौराणिक कथाएँ शामिल हैं।
- **उपनिषद** – उपनिषद (वेदांत) में “अत्मा” और “परमात्मा” पर दार्शनिक चर्चाएँ हैं।
- **महाभारत और रामायण के महाकाव्य** – दो महाकाव्यों में से, महाभारत उम्र में बड़ा है और संभवतः 10 वीं शताब्दी ईसा पूर्व से चौथी शताब्दी ईस्वी तक के मामलों को दर्शाता है। मूल रूप से इसमें 8800 छंद थे (जिन्हें जया संहिता कहा जाता है)। अंतिम संकलन में छंद को 1,00,000 तक लाया गया जिसे महाभारत या सतसहास्री संहिता के रूप में जाना जाता है। इसमें कथा, वर्णनात्मक और उपदेशात्मक सामग्री शामिल है। रामायण में मूल रूप से 12000 छंद शामिल थे जिन्हें बाद में 24000 तक उठाया गया था। इस महाकाव्य में इसके उपदेशात्मक अंश भी हैं जिन्हें बाद में जोड़ा गया था।
- **सूत्र** – सूत्र में श्रुतसूत्र (जिसमें बलिदान, शाही राज्याभिषेक शामिल हैं) और गृह्य सूत्र (जिसमें जन्म, नामकरण, विवाह, अंतिम संस्कार आदि) जैसे अनुष्ठान साहित्य शामिल हैं।
- **बौद्ध धार्मिक ग्रंथ** – प्रारंभिक बौद्ध ग्रंथ पाली भाषा में लिखे गए थे और इन्हें आमतौर पर त्रिपिटक (तीन टोकरीयाँ) के नाम से जाना जाता है – सुत्त पिटक, विनय पिटक और अभिधम्म पिटक। ये ग्रंथ उस युग की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों पर अमूल्य प्रकाश डालते हैं। वे बुद्ध के युग में राजनीतिक घटनाओं का संदर्भ भी देते हैं।
- **जैन के धार्मिक ग्रंथ** – जैन ग्रंथों को आमतौर पर “अनगास” कहा जाता है, जो प्राकृत भाषा में लिखे गए थे, और इनमें जैनियों की दार्शनिक अवधारणाएँ थीं। उनमें कई ग्रंथ हैं जो महावीर के युग में पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार के राजनीतिक इतिहास को समेटने में मदद करते हैं। जैन ग्रंथों में बार-बार व्यापार और व्यापारियों का उल्लेख है।

**धर्मनिरपेक्ष साहित्य:** धर्मनिरपेक्ष साहित्य का एक बड़ा निकाय भी है जैसे:

- **धर्मशास्त्र / कानून की पुस्तकें** – ये विभिन्न प्रकार के साथ-साथ राजाओं और उनके अधिकारियों के लिए कर्तव्यों को पूरा करते हैं। वे नियमों को निर्धारित करते हैं जिसके अनुसार संपत्ति को आयोजित, बेचा और विरासत में लिया जाना है। वे चोरी, हत्या आदि के लिए दोषी व्यक्तियों को दंड भी देते हैं।
- **अर्थशास्त्र** – कौटिल्य का अर्थशास्त्र मौर्यों के काल में समाज और अर्थव्यवस्था की स्थिति को दर्शाता है।
- **कालिदास का साहित्यिक कार्य** – महान कवि कालिदास की कृतियों में काव्य और नाटक शामिल हैं, जिनमें सबसे महत्वपूर्ण है अभिज्ञानशाकुंतलम्। रचनात्मक रचना होने के अलावा, वे गुप्त काल में उत्तर और मध्य भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के बारे में जानकारी देते हैं।
- **राजतरंगिणी** – यह कल्हण द्वारा लिखी गई प्रसिद्ध पुस्तक है और इसमें 12 वीं शताब्दी ईस्वी कश्मीर के सामाजिक और राजनीतिक जीवन को दर्शाया गया है।
- **चारितास / आत्मकथाएँ** – चारितास राजा कवियों द्वारा राजा हर्षवर्धन की प्रशंसा में बाणभट्ट द्वारा लिखित हर्षचरित जैसे शासकों की प्रशंसा में लिखी गई आत्मकथाएँ हैं।

**संगम साहित्य** – यह सबसे पुराना दक्षिण भारतीय साहित्य है, जो एक साथ इकट्ठे हुए लोगों (संगम) द्वारा निर्मित है, और डेल्टा तमिलनाडु में रहने वाले लोगों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है। इस तमिल साहित्य में literature सिलप्पादिकारम 'और kal मणिमेक्लै' जैसे साहित्यिक रत्न शामिल हैं।

## भारत में प्रागैतिहासिक काल – Prehistoric Periods in India

- पुरापाषाण काल (पुराना पाषाण काल): 500,000 ईसा पूर्व – 10,000 ईसा पूर्व
- मेसोलिथिक अवधि (लेट स्टोन एज): 10,000 ईसा पूर्व – 6000 ईसा पूर्व
- नवपाषाण काल (नया पाषाण युग): 6000 ईसा पूर्व – 1000 ईसा पूर्व
- चालकोलिथिक अवधि (स्टोन कॉपर आयु): 3000 ईसा पूर्व – 500 ईसा पूर्व
- लौह युग: 1500 ईसा पूर्व – 200 ईसा पूर्व

### पाषाण युग

पाषाण युग प्रागैतिहासिक काल है, अर्थात्, स्क्रिप्ट के विकास से पहले की अवधि, इसलिए इस अवधि के लिए जानकारी का मुख्य स्रोत पुरातात्विक खुदाई है। रॉबर्ट ब्रूस फूटे पुरातत्वविद् हैं जिन्होंने भारत में पहला पैलियोलिथिक उपकरण, पल्लवारम हथकड़ी की खोज की थी।

भूवैज्ञानिक युग के आधार पर, पत्थर के औजारों के प्रकार और प्रौद्योगिकी, और निवाह आधार के आधार पर, भारतीय पाषाण युग को मुख्य रूप से तीन भागों में वर्गीकृत किया गया है-

- पुरापाषाण युग (पुराने पत्थर की आयु): अवधि – 500,000 – 10,000 ई.पू.
- मेसोलिथिक आयु (देर से पत्थर की उम्र): अवधि – 10,000 – 6000 ईसा पूर्व
- नवपाषाण युग (नए पत्थर की आयु): अवधि – 6000 – 1000 ई.पू.

### पुरापाषाण युग (पुराना पाषाण युग) – Palaeolithic Age (Old Stone Age)

‘पुरापाषाण’ ग्रीक शब्द ‘पैलियो’ से लिया गया है जिसका अर्थ है पुराना और stone लिथिक ‘अर्थ। इसलिए, पुरापाषाण युग शब्द पुराने पत्थर की उम्र को दर्शाता है। भारत की पुरानी पाषाण युग या पुरापाषाण संस्कृति प्लीस्टोसीन काल या हिमयुग में विकसित हुई थी, जो उस युग का एक भूवैज्ञानिक काल है जब पृथ्वी बर्फ और मौसम से ढँकी हुई थी ताकि मानव या पौधे का जीवन बच सके। लेकिन उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में, जहां बर्फ पिघलती है, पुरुषों की शुरुआती प्रजातियां मौजूद हो सकती थीं।

#### पुरापाषाण युग की मुख्य विशेषताएं –

1. माना जाता है कि भारतीय लोग ‘नेग्रिटो’ जाति के थे, और खुली हवा, नदी की घाटियों, गुफाओं और रॉक शेल्टर में रहते थे।
2. वे भोजन इकट्ठा करने वाले थे, जंगली फल और सब्जियां खाते थे और शिकार पर रहते थे।
3. घरों, मिट्टी के बर्तनों, कृषि का ज्ञान नहीं था। यह केवल बाद के चरणों में था जब उन्होंने आग की खोज की।
4. ऊपरी पुरापाषाण युग में, चित्रों के रूप में कला का प्रमाण है।
5. मनुष्य अप्रचलित, खुरदरे पत्थरों जैसे हाथ की कुल्हाड़ियों, हेलिकॉप्टरों, ब्लेडों, बर्गर और स्क्रेपर्स का इस्तेमाल करते थे।

पुरापाषाण पुरुषों को भारत में ‘क्वार्टजाइट’ के पुरुष भी कहा जाता है क्योंकि पत्थर के औजार एक हार्ड रॉक से बने होते हैं जिसे क्वार्टजाइट कहा जाता है। भारत में पुराने पाषाण युग या पुरापाषाण युग को लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले पत्थर के औजारों की प्रकृति

के अनुसार और जलवायु परिवर्तन की प्रकृति के अनुसार तीन चरणों में विभाजित किया गया है।

1. निम्न पुरापाषाण युग: 100,000 ईसा पूर्व तक
2. मध्य पुरापाषाण युग: 100,000 ईसा पूर्व – 40,000 ईसा पूर्व
3. ऊपरी पुरापाषाण युग: 40,000 ईसा पूर्व – 10,000 ई.पू.

### **निम्न पुरापाषाण युग (प्रारंभिक पुरापाषाण युग) – Lower Palaeolithic Age (Early Palaeolithic Age)**

1. यह हिम युग के अधिक से अधिक भाग को कवर करता है।
2. शिकारी और भोजन इकट्ठा करने वाले; प्रयुक्त उपकरण हाथ की कुल्हाड़ी, हेलिकॉप्टर और क्लीवर थे। उपकरण मोटे और भारी थे।
3. सबसे कम निचले पुरापाषाण स्थलों में से एक महाराष्ट्र में बोरी है।
4. औजार बनाने के लिए चूना पत्थर का भी इस्तेमाल किया गया था। गुफाओं और रॉक आश्रयों सहित निवास स्थान हैं।
5. एक महत्वपूर्ण स्थान मध्य प्रदेश में भीमबेटका है।

निम्न पुरापाषाण युग के प्रमुख स्थल-

- कम पुरापाषाण युग के प्रमुख स्थल
- सोहन घाटी (वर्तमान पाकिस्तान में)
- थार रेगिस्तान में साइटें
- कश्मीर
- मेवाड़ के मैदान
- सौराष्ट्र
- गुजरात
- मध्य भारत
- दक्कन का पठार
- छोटानागपुर पठार
- कावेरी नदी के उत्तर में
- यूपी में बेलन घाटी

### **मध्य पुरापाषाण युग – Middle Palaeolithic age**

1. उपयोग किए गए उपकरण फ्लेक्स, ब्लेड, पॉइंटर्स, स्क्रैपर्स और बोर्स थे।
2. उपकरण छोटे, हल्के और पतले थे।
3. अन्य उपकरणों के संबंध में हाथ की कुल्हाड़ियों के उपयोग में कमी थी।

महत्वपूर्ण मध्य पुरापाषाण युग के स्थल-

- यूपी में बेलन घाटी
- लूनी घाटी (राजस्थान)
- सोन और नर्मदा नदियाँ
- भीमबेटका
- तुंगभद्रा नदी की घाटियाँ
- पोटवार पठार (सिंधु और झेलम के बीच)
- संघो गुफा (पेशावर, पाकिस्तान के पास)

## ऊपरी पुरापाषाण युग – Upper Palaeolithic age

1. ऊपरी पुरापाषाण युग बर्फ युग के अंतिम चरण के साथ मेल खाता था जब जलवायु तुलनात्मक रूप से गर्म और कम आर्द्र हो गई थी।
2. होमो सेपियन्स का उद्भव।
3. अवधि उपकरण और प्रौद्योगिकी में नवाचार द्वारा चिह्नित है। सुई, हार्पून, समानांतर-पक्षीय ब्लेड, मछली पकड़ने के उपकरण और बरिन टूल सहित बहुत सारे हथी के उपकरण।

### ऊपरी पुरापाषाण युग के प्रमुख स्थल-

- भीमबेटका (भोपाल का दक्षिण) – हाथ की कुल्हाड़ियाँ और क्लीवर्स, ब्लेड, स्क्रैपर और कुछ ब्यूरो यहाँ पाए गए हैं।
- बेलन
- छोटा नागपुर पठार (बिहार)
- महाराष्ट्र
- उड़ीसा और आंध्र प्रदेश में पूर्वी घाट
- अस्थि उपकरण केवल आंध्र प्रदेश में कुनूल और मुचचतला चिंतामणि गवि के गुफा स्थलों पर पाए गए हैं।

## मेसोलिथिक काल (मध्य पाषाण युग) – Neolithic Period (New Stone Age)

नियोलिथिक (Neolithic) शब्द ग्रीक शब्द Neo 'नियो' से लिया गया है जिसका अर्थ है नया और lithic लिथिक 'अर्थ पत्थर। इस प्रकार, नवपाषाण युग शब्द 'न्यू स्टोन एज' को संदर्भित करता है। इसे 'नवपाषाण क्रांति' भी कहा जाता है क्योंकि इसने मनुष्य के सामाजिक और आर्थिक जीवन में कई महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। नवपाषाण युग ने खाद्य योजक से खाद्य उत्पादक में बदल दिया।

### नवपाषाण युग की विशेषता विशेषताएं-

- **उपकरण और हथियार** – लोगों ने पॉलिश किए गए पत्थरों से बने उपकरणों के अलावा माइक्रोलिथिक ब्लेड का इस्तेमाल किया। विशेष रूप से जमीन और पॉलिश हाथ की कुल्हाड़ियों के लिए सील्ट का उपयोग महत्वपूर्ण था। उन्होंने हड्डियों से बने उपकरणों और हथियारों का भी इस्तेमाल किया – जैसे सुई, स्क्रैपर्स, बोरर्स, एरोहेड्स इत्यादि। नए पॉलिश किए गए उपकरणों के उपयोग से मनुष्यों के लिए खेती करना, शिकार करना और अन्य गतिविधियों को बेहतर तरीके से करना आसान हो गया।
- **कृषि** – नवपाषाण युग के लोगों ने रागी और घोड़े चना (कुलटी) जैसे भूमि और विकसित फल और मकई की खेती की। उन्होंने मवेशी, भेड़ और बकरियों को भी पालतू बनाया।
- **मिट्टी के बर्तन** – कृषि के आगमन के साथ, लोगों को खाना पकाने के साथ-साथ खाना बनाने, उत्पाद खाने आदि की आवश्यकता होती थी, इसीलिए कहा जाता है कि इस चरण में बड़े पैमाने पर मिट्टी के बर्तन दिखाई देते थे। इस अवधि के मिट्टी के बर्तनों को ग्रेवेयर, ब्लैक-बर्न वेयर और मैट प्रभावित वेयर के तहत वर्गीकृत किया गया था। नवपाषाण युग के प्रारंभिक चरणों में, हस्तनिर्मित मिट्टी के बर्तनों को बनाया गया था, लेकिन बाद में, बर्तन बनाने के लिए पैर के पहियों का उपयोग किया गया था।

- **आवास और बसे जीवन** – नवपाषाण युग के लोग आयताकार या गोलाकार घरों में रहते थे जो मिट्टी और नरकट से बने होते थे। नवपाषाण काल के लोग नाव बनाना जानते थे और सूती, ऊनी और बुने हुए कपड़े पहन सकते थे। नवपाषाण युग के लोगों ने अधिक व्यवस्थित जीवन का नेतृत्व किया और सभ्यता की शुरुआत का मार्ग प्रशस्त किया।

नवविवाहित लोग पहाड़ी इलाकों से ज्यादा दूर नहीं रहते थे। वे मुख्य रूप से पहाड़ी नदी घाटियों, रॉक शेल्टर और पहाड़ियों की ढलानों पर बसे हुए थे, क्योंकि वे पूरी तरह से हथियारों और पत्थर से बने उपकरणों पर निर्भर थे।

### महत्वपूर्ण नवपाषाण स्थल-

1. **कोल्डिहवा और महागरा (इलाहाबाद के दक्षिण में स्थित):** यह साइट कच्चे हाथ से बने मिट्टी के बर्तनों के साथ-साथ वृत्ताकार झोपड़ियों का प्रमाण प्रदान करती है। चावल के भी प्रमाण हैं, जो चावल के प्राचीनतम प्रमाण हैं, न केवल भारत में बल्कि विश्व में कहीं भी
2. **मेहरगढ़ (बलूचिस्तान, पाकिस्तान)** – सबसे पहला नवपाषाण स्थल, जहाँ लोग धूप में सूखने वाली ईंटों से बने घरों में रहते थे और कपास और गेहूं जैसी फसलों की खेती करते थे।
3. **बुर्जहोम (कश्मीर)** – घरेलू कुत्तों को उनकी कब्रों में स्वामी के साथ दफनाया गया था; लोग गह्वों में रहते थे और पॉलिश पत्थरों के साथ-साथ हड्डियों से बने औजारों का इस्तेमाल करते थे।
4. **गुफ़राल (कश्मीर)** – यह नवपाषाण स्थल घरों में गड्ढे में रहने, पत्थर के औजार और कब्रिस्तान के लिए प्रसिद्ध है।
5. **चिरांद (बिहार)** – नवपाषाण काल के लोग हड्डियों से बने औजार और हथियारों का इस्तेमाल करते थे।
6. **पिकलिहल, ब्रह्मगिरी, मस्की, टकलाकोटा, हल्लूर (कर्नाटक)** – लोग पशु चराने वाले थे। उन्होंने भेड़ और बकरियों को पालतू बनाया। राख के टीले मिले हैं।
7. **बेलन घाटी** (जो विंध्य के उत्तरी इलाकों में और नर्मदा घाटी के मध्य भाग में स्थित है) – तीनों चरण अर्थात् पुरापाषाण, मेसोलिथिक और नवपाषाण युग क्रम से पाए जाते हैं।

### चालकोलिथिक युग (ताम्र पाषाण युग) – Chalcolithic Age (Stone Copper Age)

चालकोलिथिक युग ने पत्थर के औजारों के साथ धातु के उपयोग के उद्भव को चिह्नित किया। इस्तेमाल की जाने वाली पहली धातु तांबा थी। चालकोलिथिक युग काफी हद तक पूर्व-हड़प्पा चरण के लिए लागू होता है, लेकिन देश के कई हिस्सों में, यह कांस्य हड़प्पा संस्कृति के अंत के बाद दिखाई देता है।

### चालकोलिथिक युग के लक्षण-

**कृषि और पशु पालन** – पाषाण-ताम्र युग में रहने वाले लोग पालतू पशुओं को पालते थे और खाद्यान्न की खेती करते थे। उन्होंने गायों, भेड़, बकरियों, सुअर और भैंसों का शिकार किया और हिरणों का शिकार किया। यह स्पष्ट नहीं है कि वे घोड़े से परिचित थे या नहीं। लोगों ने गोमांस खाया लेकिन किसी भी बड़े पैमाने पर पोर्क नहीं लिया। चालकोलिथिक चरण के लोगों ने गेहूं और चावल का उत्पादन किया, उन्होंने बाजरे की खेती भी की। उन्होंने कई दालें जैसे मसूर (मसूर), काला चना, हरा चना और घास मटर का उत्पादन किया। दक्कन की

काली कपास मिट्टी में कपास का उत्पादन किया गया था और निचले डेक्कन में रागी, बाजरा और कई बाजरा की खेती की गई थी। पूर्वी क्षेत्रों में पत्थर-तांबे के चरण से संबंधित लोग मुख्य रूप से मछली और चावल पर रहते थे, जो अभी भी देश के उस हिस्से में एक लोकप्रिय आहार है।

**मिट्टी के बर्तन** – पत्थर-तांबे के चरण के लोगों ने विभिन्न प्रकार के मिट्टी के बर्तनों का उपयोग किया, जिनमें से एक को काले और लाल मिट्टी के बर्तन कहा जाता है और ऐसा लगता है कि उस युग में व्यापक रूप से प्रचलित था। गेरु रंग का बर्तन भी लोकप्रिय था। कुम्हार के पहिये का उपयोग किया गया था और सफेद टैक्सिक डिजाइनों के साथ पेंटिंग भी की गई थी।

**ग्रामीण बस्तियाँ** – हुए ईंटों से परिचित नहीं थे। वे मिट्टी के ईंटों से बने फूस के घरों में रहते थे। इस युग ने सामाजिक असमानताओं की शुरुआत को भी चिह्नित किया, क्योंकि प्रमुख आयताकार घरों में रहते थे जबकि आम लोग गोल झोपड़ियों में रहते थे। उनके गांवों में विभिन्न आकार, गोलाकार या आयताकार के 35 से अधिक घर शामिल थे। अराजक अर्थव्यवस्था को ग्राम अर्थव्यवस्था माना जाता है।

**कला और शिल्प** – चालकोलिथिक लोग विशेषज्ञ कॉपस्मिथ थे। वे तांबे को गलाने की कला जानते थे और पत्थर के अच्छे कर्मचारी भी थे। वे कताई और बुनाई जानते थे और विनिर्माण कपड़े की कला से अच्छी तरह परिचित थे। हालाँकि, वे लिखने की कला नहीं जानते थे।

**पूजा** – चोलकोलिथिक साइटों से पृथ्वी देवी की छोटी मिट्टी की छवियां मिली हैं। इस प्रकार यह कहना संभव है कि उन्होंने देवी माँ की वंदना की। मालवा और राजस्थान में, बैल की छतों पर बने शैलचित्रों से पता चलता है कि बैल एक धार्मिक पंथ के रूप में कार्य करते थे।

**शिशु मृत्यु दर** – चोलकोलिथिक लोगों में शिशु मृत्यु दर अधिक थी, जैसा कि पश्चिम महाराष्ट्र में बड़ी संख्या में बच्चों के दफनाने से स्पष्ट है। खाद्य-उत्पादक अर्थव्यवस्था होने के बावजूद, शिशु मृत्यु दर बहुत अधिक थी। हम कह सकते हैं कि चालकोलिथिक सामाजिक और आर्थिक प्रतिमान दीर्घायु को बढ़ावा नहीं देते थे।

**आभूषण** – चालकोलिथिक लोग आभूषण और सजावट के शौकीन थे। महिलाओं ने खोल और हड्डी के गहने पहने और अपने बालों में बारीक कंधी का काम किया। उन्होंने कारेलियन, स्टीटाइट और क्वार्ट्ज क्रिस्टल जैसे अर्ध-कीमती पत्थरों के मोतियों का निर्माण किया।

**महत्वपूर्ण चालकोलिथिक (ताम्र पाषाण युग) स्थान –**

- **अहार (बनास घाटी, दक्षिण पूर्वी राजस्थान)** – इस क्षेत्र के लोगों ने गलाने और धातु विज्ञान का अभ्यास किया, अन्य समकालीन समुदायों को तांबे के उपकरण की आपूर्ति की। यहां चावल की खेती होती
- **गिलुंड (बनास घाटी, राजस्थान)** – स्टोन ब्लेड उद्योग की खोज यहाँ की गई।
- **दायमाबाद (अहमदनगर, गुजरात)** – गोदावरी घाटी में सबसे बड़ा जोर्वे संस्कृति स्थल है। यह कांस्य के सामान की वसूली के लिए प्रसिद्ध है जैसे कि कांस्य का गैंडा, हाथी, सवार के साथ दो पहिया रथ और भैंस।
- **मालवा (मध्य प्रदेश)** – मालवा संस्कृति की बस्तियाँ ज्यादातर नर्मदा और उसकी सहायक नदियों पर स्थित हैं। यह सबसे अमीर शैलोथिक सिरेमिक का प्रमाण प्रदान करता है।

- **कायथा (मध्य प्रदेश)** – कायथा संस्कृति का निपटान ज्यादातर चंबल नदी और उसकी सहायक नदियों पर स्थित था। घरों में मिट्टी से बने फर्श थे, मिट्टी के बर्तनों में पूर्व-हड़प्पा तत्व के साथ-साथ तेज धार वाले तांबे के सामान पाए गए थे।
- **चिरांद, सेनुर, सोनपुर (बिहार), महिषदल (पश्चिम बंगाल)** – ये इन राज्यों में प्रमुख कालकोठरी स्थल हैं।
- **संगमोन, इनामगाँव और नासिक (महाराष्ट्र)** – यहाँ ओवन और गोलाकार गड्डे वाले बड़े मिट्टी के घरों की खोज की गई है।
- **नवदटोली (नर्मदा पर)** – यह देश की सबसे बड़ी चॉकोलिथिक बस्तियों में से एक थी। यह 10 हेक्टेयर में फैला था और लगभग सभी खाद्यान्नों की खेती करता था।
- **नेवासा (जोरवे, महाराष्ट्र) और एरन (मध्य प्रदेश)** – ये स्थल अपनी गैर-हड़प्पा संस्कृति के लिए जाने जाते हैं।